B.M.A. College Baheri Darbhanga (LNMU)
B.A (Hons) Part - I Paper - II

Page No. 1
Date 2-07-2020

ग्रामीण साख या कृषि वित्त से अर्थ

Dr. S.K. Singh
Dept of Economics

(MEANING OF RURAL CREDIT OR AGRICULTURAL FINANCE)

ग्रामीण साख से अर्थ उस साख से है जिसकी आवश्यकता ग्रामीण क्षेत्रो मे होती है। चूंकि ग्रामीण क्षेत्रो में अधिकांश निवासी कृषि पर ही निर्भर होते है अतः ग्रामीण साख का सामान्य अर्थ कृषि साख से लगाया जाता है।

कृषि साख से अर्थ उस साख से है जिसकी आवश्यकता कृषि कार्य करने मे होती है। यह आवश्यकता बीज खाद व यन्त्र क्रय करने या मालगुजारी देने या कृषि सम्बंधी अन्य कार्य करने के लिए हो सकती है। इस (कृषि वित्त) की पूर्ति साहूकार, सहकारी साख संस्थाएँ, भूमि विकास बैंक, भूमि बन्धक बैंक, व्यापारिक बैंक, सरकार व अन्य वित्तीय निगमो के द्वारा की जाती है।

ग्रामीण बैंकिंग से अर्थ ग्रामीण जनता को उपलब्ध बैंकिंग सुविधाओं से है।

भारत मे कृषि वित्त या साख की आवश्यकता

(NEED OF AGRICULTURAL FINANCE OR CREDIT IN INDIA)

भारत में कृषि की वित्तीय आवश्यकताओं या ग्रामीण बैंक या साख की आवश्यकताओं को निम्न तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है

(i) अल्पकालीन साख - भारत मे कृषि कृषक को बीज, उर्वरक, चारा, श्रमिको को मजदूरी तथा अन्य तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए अल्पकालीन साख या ऋण की आवश्यकता होती है। इस साख या ऋण की अवधि 15 माह तक होती है। जब फसल काट ली जाती है तो ऐसे ऋण को चुका दिया जाता है।

(ii) मध्यमकालीन साख - कृषक को अपनी भूमि मे सुधार के लिए कुछ साख ऋण की आवश्यकता होती है। जैसे कृषि उपकरण क्रय करने के लिए या सिंचाई व्यवस्था करने या पशु क्रय करने के लिए। ऐसे ऋण की अवधि 15 माह से लेकर 5 वर्ष तक की होती है।

(iii) दीर्घकालीन साख :- इस साख की आवश्यकता उस समय होती है, जबकी कृषक नयी भूमि क्रय करके अपने भू-खण्ड की मात्रा बढ़ाना, पुराने ऋण को चुकाना, भूमि मे कोई स्थायी सुधार करना या कृषि के लिए मूल्यवान मशीनरी (जैसे ट्रैक्टर), आदि खरीदना चाहता है।